राजस्थान राजनीतिक और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संघ (PISAR)

एवं

राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित

राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक–19 मार्च, 2023, प्रातः 10:00 बजे

आयोजन स्थलः राजनीति विज्ञान विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

राजनीति विज्ञान विषय की दशा एवं दिशाः नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के परिप्रेक्ष्य में

आज से लगभग 2600 वर्षों पूर्व पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन की दूनिया में समाज विज्ञान से स्वतंत्र, यूनानी विचारक अरस्तू की पॉलिटिक्स से आरंभ होने वाला विषय राजनीति विज्ञान के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस विषय के पितामह ने इसे विज्ञानों के सोपानों में सर्वोच्च या मास्टर साइंस कहा है। दूनियाभर की अकादमिक संस्थानों में यह विषय आज भी एक लोकप्रिय विषय के रूप में स्थापित है। व्यवहारवादी एवं उतरव्यवहारवादी क्रांति ने इस विषय के अध्ययन व अनुसंधान को एक नवीन दिशा व दशा प्रदान की है। लेकिन इसके बाद की राजनीतिक दूनिया में व्यापक, त्रीव एवं विस्मयकारी बदलाव आ रहे है। दूनियाभर में न केवल राष्ट्रीय लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के समक्ष अपितु विश्व शांति एवं सुरक्षा के लिए कटिबद्ध अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लिए भी दिनों–दिन नवीन चुनौतियां उदित हो रही हैं, वे चाहे जलवायु परिवर्तन से जुड़ी हो अथवा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा या मानकों से या नैतिकता से या विश्व खाद्यान्न से या विश्व शांति को बनाएं रखने से जुड़ी हो अथवा मानव की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के वैश्विक संकट से संबंधित हो, मानव सभ्यता के लिए गंभीर

संकट के संकेतक है। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में दूनियाभर के राजनीति विज्ञानियों का दायित्व है कि वे राजनीति विज्ञान विषय को फिर से एक नई दिशा व दशा की ओर उन्मुख करें जिससे कि मानव समुदाय की इन समस्याओं का निदान खोजकर वह सर्वोच्च मानवीय विज्ञान के अपने नामकरण को बरकरार रख सकें।

राजनीति विज्ञान विषय की भारतवर्ष में क्या दशा एवं दिशा है? भारत सरकार द्वारा 2020 में घोषित नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में राजनीति विज्ञान अनुशासन के विकास की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर विचार–विमर्श किया जाएगा। इस कार्यशाला में राजस्थान प्रदेश सहित उच्च शिक्षण संस्थानों में राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के बारे में परिचर्चा के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि क्या यह पाठ्यक्रम 2023 में भी 1950 के दशक के वातावरण के अनुरूप ही बना हुआ है अथवा उसमें 22वीं सदी की दिशाओं के अनुरूप उसमें बदलाव किया गया है? इस विषय को किस तरह से नई दिशा दी जाएं? ताकि इसकी दशा उत्कृष्ट हो सकें। इन्हीं प्रश्नों पर इस एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतवर्ष के राजनीति विज्ञानियों के द्वारा चिंतन–मनन किया जाएगा।

कार्यशाला में परिचर्चा के मुख्य बिन्दु:

- राजनीति विज्ञान अनुशासन की दशा एवं दिशा– वैश्विक संदर्भ।
- भारत में राजनीति विज्ञान विषय: नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्ररिप्रेक्ष्य में चुनौतियां व संभावनाएं।
- राजस्थान में राजनीति विज्ञान विषय की अकादमिक स्थिति एवं पाठ्यक्रम का अवलोकन।
- राजनीति विज्ञान एवं अन्तःअनुशासनात्मक दृष्टिकोण।
- राजनीति विज्ञान में समसामयिक राजनीतिक सिद्धांत और भारतीय राजनीतिक सिद्धांत।
- भारतीय राजनीतिक प्रणाली की नवीन प्रवृतियां एवं इसके निर्धारक तत्व।
- राजनीति विज्ञान में तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी व कृत्रिम मेधा का बढ़ता महत्व।
- राजनीति विज्ञान एवं पारिस्थितिकी ।
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का बदलता स्वरूप।
- राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा।

विशेष:

कार्यशाला पंजीकरण शुल्क: इच्छुक प्रतिभागी 15 मार्च, 2023 तक विभाग में पंजीकरण करा सकते है।
पिसार की सदस्यता नहीं होने पर– 200/रू
पिसार के सदस्यों के लिए– निःशुल्क।

प्रो. मंजू सिंह
विभागाध्यक्ष

डॉ. राहुल चौधरी
संयोजक
मो. 9461354055

डॉ. के सी सामोता
आयोजन सचिव
मो. 9784084824